लोकसभा अध्यक्ष माननीय श्री ओम बिरला के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ देव संस्कृति विश्वविद्यालय का छठवाँ दीक्षान्त समारोह पृष्ठ 2 एवं 3

हम उत्कृष्ट चिंतन वाले युवा गढ़ रहे हैं।
श्रद्धेय डॉ. प्रणव जी, कुलाधिपति, देसंविवि

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

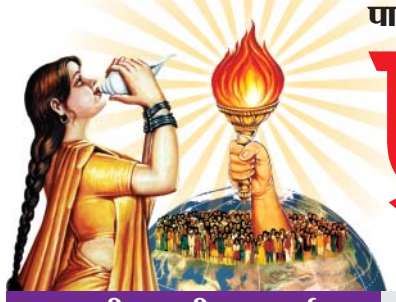

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 नवम्बर 2022

वर्ष : 35, अंक : 10
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 12 नवम्बर 2022
वार्षिक चंदा : ₹60/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 800/-
प्रति अंक : ₹ 3/-

नारी सशक्तीकरण वर्ष

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

उत्कृष्टता के साथ जुड़ें, प्रतिभा के अनुदान पाएँ

वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी का जाग्रत् आत्माओं के नाम संदेश

सौभाग्यदायी ऊर्वरक वेला

नवयुग के अरुणोदय में अब अधिक विलम्ब नहीं है। दिव्यदर्शी अन्तःस्फुरण के आधार पर यह अनुभव करते हैं कि समय के परिवर्तन की ठीक यही बेला है। जनमानस वर्तमान अवांछनीयताओं से खीझ और ऊब उठा है। उसकी आकुलता आतुरता के साथ वह दिशा अपना रही है, जिस पर चलने से घुटन से मुक्ति मिल सके और चैन की साँस लेने का अवसर मिल सके। साथ ही विश्व वातावरण ने भी अपना ऐसा निश्चय बनाया है कि अनौचित्य को उलट कर औचित्य को प्रतिष्ठित करने में अनावश्यक विलम्बन न किया जाय। उथल-पुथल के ऐसे चिह्न प्रकट हो रहे हैं जो बताते हैं कि नियति की अवधारणा-सदाशयता की ज्ञानगंगा का अवतरण, आज की आवश्यकता के अनुरूप इन्हीं दिनों बन पड़ना सुनिश्चित है।

हवा का रुख पीठ पीछे हो तो गति में अनायास ही तेजी आ जाती है। वर्षा के दिनों में बोया गया बीज सहज ही अंकुरित होता है और उस अंकुर को पौधे के रूप में लहलहाते देर नहीं लगती। बसन्त में मादाएँ गर्भधारण के कीर्तिमान बनाती हैं। किशोरावस्था बीतते-बीतते जोड़ा बनाने की उमंग अनायास ही उभरने लगती है। वातावरण की अनुकूलता में, उस प्रकार के प्रयास गति पकड़ते हैं और प्रायः सफल भी होते हैं।

दुर्दान्त रावण का अन्त होना था तो दो तापसी युवक ही उस विशाल परिकर को धराशायी करने में समर्थ हो गये। दुर्धर्ष हिरण्यकश्यप हारा और प्रह्लाद का सिक्का जम गया। समय आने पर किसी दिग्भ्रान्त करने वाले झाड़-झंखाड़ों के जंगल को नष्ट करने में एक चिन्गारी भी दावानल बनने के लिए पर्याप्त हो सकती है। प्रलय की चुनौती जैसी ताड़का को राम ने और पूतना को कृष्ण ने बचपन में ही तो धराशायी कर दिया था। महाकाल का संकल्प यदि युग परिवर्तन का तारतम्य इन्हीं दिनों बिठा ले, तो किसी को भी आश्चर्य चकित नहीं होना चाहिए।

इक्कीसवीं सदी प्रतिभावानों की क्रीड़ास्थली होगी। उनके द्वारा वह कर दिखाया जायेगा जो असंभव नहीं तो कष्टसाध्य तो कहा जा सकता है। निकट भविष्य की कुछ सुनिश्चित सम्भावनायें ऐसी हैं जिनमें हाथ डालने वाले सफल होकर ही रहेंगे। अर्जुन की तरह नियति द्वारा पहले से ही मारे गये विपक्षियों का हनन करके अनायास ही श्रेय और प्रेय का दुहरा लाभ प्राप्त करेंगे। इसी माहौल में उन्हें प्रतिभा परिवर्धन का वह लाभ भी मिल जायेगा, जिसके आधार पर मूर्धन्य युगशिल्पियों में उनकी भी गणना हो सके।

ऐसी होगी कल की दुनियाँ

अगले दिनों प्रचलित दुष्प्रवृत्तियों में से अधिकांश अपनी मौत मरेंगी, जिस प्रकार शीत ऋतु में मक्खी-मच्छरों का प्रकृति की परम्परा के अनुसार अन्त हो जाता है। अन्धविश्वास, मूढ़ मान्यतायें, रूढ़ियाँ, अंध परम्परायें, दूरदर्शी विवेकशीलता का ऊषाकाल प्रकट होते ही उल्लू, चमगादड़ों की तरह अपने कोटरों में जा घुसेंगी। संग्रही और अपव्ययी जिस प्रकार आज अपना दर्प दिखाते हैं, उसके लिए तब कोई आधार शेष न रहेगा। संग्रही, आलसी और लालची तब भाग्यवान होने की दुहाई न दे सकेंगे।

एक और भी बड़ी बात यह होगी कि चिरकाल से उपेक्षित नारी वर्ग न केवल अपनी गरिमा को उपलब्ध करेगा, वरन उसे नर का मार्गदर्शन-नेतृत्व करने का गौरव भी मिलेगा। पिसे हुए, पिछड़े हुए ग्राम उभरेंगे और उन सभी सुविधाओं से सम्पन्न होंगे, जिनके लिए उस क्षेत्र के निवासियों को आज शहरों की ओर भागना पड़ता है। समता और एकता के मार्ग में अड़े हुए अवरोध एक-एक करके स्वयं हटेंगे और औचित्य के विकसित होने का मार्ग साफ करते जायेंगे। सम्मान वैभव को नहीं, उस वर्चस्व को मिलेगा जो आदर्शों के लिए उत्सर्ग करने का साहस संजोता है। पाखण्ड का कुहासा पिछले दिनों कितना ही सघन क्यों न रहा हो, अगले दिनों उसके और लम्बे समय तक पैर जमाये रहने की कोई संभावना नहीं है।

इन तथ्यों के प्रकटीकरण पर विश्वास करते हुए जो तदनुरूप अपनी गतिविधियों में परिवर्तन करेंगे, वे हर दृष्टि से नफे में रहेंगे। आज का दृष्टिकोण जिसे घाटा बताता है, उपहासास्पद बताता है, कल वैसी स्थिति न रहेगी। लोग वास्तविकता को अनुभव करेंगे और समय रहते अपनी प्रवृत्तियों को बदल लेंगे।

यह समय चेतने का है

जीवन्तों और जागृतों को इन दिनों युग चेतना अनुप्राणित किए बिना रह नहीं सकती। उन्हें ढर्रे का जीवन जीते रहने से ऊब उत्पन्न होगी और चेतना अन्तराल में ऐसी हलचलों का समुद्र मन्थन खड़ा करेगी, ऐसा-कुछ करने के लिए बाधित करेगी, जो समय को बदलने के लिए अभीष्ट एवं आवश्यक है। साँप नियत समय पर केंचुली बदलता है। अब ठीक यही समय है कि प्राणवान, प्रज्ञावान अपना केंचुल बदल डालें। अपनी समग्र क्षमता संजोकर दृष्टिकोण में ऐसा परिवर्तन करें, जिससे भावी क्रिया-कलापों में ऐसे तत्त्वों का समावेश हो, जिन्हें अनुकरणीय, अभिनन्दनीय माना जा सके। अन्तराल में उत्कृष्ट उमंगें और क्रिया-कलापों का, आदतों का, नये सिरे से ऐसा निर्धारण करें, जो युगशिल्पियों के लिए प्रेरणाप्रद बन सके।

आदर्शों को महत्त्व दें, यह न सोचें कि तथाकथित सगे-सम्बन्धी क्या परामर्श देते हैं? प्रहलाद, विभीषण, भरत, मीरा आदि को कुटुम्बियों का नहीं, आदर्शों का अनुशासन अपनाना पड़ा था। उच्चस्तरीय साहस के प्रकटीकरण का यही केन्द्र बिन्दु है कि जीवन को श्रेय-साधना से ओतप्रोत करके दिखाया जाय। यह प्रयोजन संयम और अनुशासन अपनाये जाने की अपेक्षा करता है। प्रचलन तो ढलान की ओर लुढ़कने का है। पानी नीचे की ओर बहता है, ऊपर से नीचे गिरता है। उत्कृष्टता की ऊँचाई तक उछलने के लिए शूरवीरों जैसा साहस दिखाना पड़ता है। इस प्रदर्शन को अभी टाल दिया गया तो संभव है, ऐसा अवसर फिर जीवन में आए ही नहीं।

भ्रम और भटकावों से बचें

प्रतिभा किसी पर आसमान से नहीं टपकती, उसे पुरुषार्थपूर्वक, मनोबल के सहारे अर्जित करना पड़ता है। अब तक के प्रतिभाशालियों के प्रगतिक्रम पर दृष्टिपात करने से एक ही निष्कर्ष निकलता है, कि उनके द्वारा अपनाये गये काम में उल्लास भरी उमंगें उमड़ती रहीं, मानसिक एकाग्रता के साथ तन्मयता जुटाई गयी, पुरुषार्थ को प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाकर अवरोधों से जूझा गया तथा प्रतिकूलता को अनुकूलता में बदलकर अपनी प्रखरता का परिचय दिया गया। सफलताएँ इसी आधार पर मिलती हैं। सफलता मिलने पर हौसले बुलंद होते हैं। दूने उत्साह से काम करने को जी करता है। इस प्रयास में प्रतिभा विकसित होती है और परिपक्व भी बनती है।

प्रतिभा परिवर्धन के उद्दण्ड उपाय तो अनेक हैं। उन्हें आतंकवादी, अनाचारी तक अपनाते और प्रेतपिशाचों की तरह अनेक को भयभीत कर देते हैं, किन्तु स्थिरता और सराहना उन्हीं प्रतिभावानों के साथ जुड़ी रहती है जो शालीनता अपनाते और आदर्शों के प्रति अपने वैभव को उत्सर्ग करने में चूकते नहीं। ऐसे लोग शबरी, गिलहरी, केवट स्तर के ही क्यों न हों, अपने को अजर-अमर बना लेते हैं और अनुकरण करने के लिए अनेक को आकर्षित करते हैं। उनकी चुम्बकीय विलक्षणता न जाने क्या-क्या, कहाँ-कहाँ से बटोर लाती है और बीज को वृक्ष बनाकर खड़ा कर देती है।

जीवन का स्वर्णिम सुयोग

प्रतिभा परिष्कार का अजस्र लाभ उठाने के लिए इन दिनों स्वर्ण-सुयोग आया है। युग सन्धि की बेला में जीवट वाले प्राणवानों की आवश्यकता अनुभव की गई है। अवांछनीयताओं से ऐसे ही पराक्रमी जूझते हैं और हनुमान, अंगद जैसे अनगढ़ होते हुए भी लंका को धराशायी बनाने के एवं रामराज्य का सतयुगी वातावरण बनाने के दोनों मोर्चों पर अपनी समर्थ क्षमता का परिचय देते हैं। ऐसी परीक्षा की घड़ियाँ सदा नहीं आतीं। जो समय को पहचानते और बिना अवसर चूके अपना साहस का परिचय देते हैं, उन्हें प्रतिभा का धनी बनने में किसी अतिरिक्त अनुष्ठान करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। संयम और साहस का मिलन ही वरिष्ठता तक पहुँचा देता है। आत्म-साधना और लोक-साधना दोनों एक ही लक्ष्य के दो पहलू हैं। जहाँ एक को सही रीति से अपनाया जायेगा वहाँ दूसरा उसके साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ जायेगा।

यहाँ यह ध्यान रखने योग्य है, कि व्यक्ति अपने प्रभा मण्डल सम्पन्न क्षेत्र के साथ जुड़कर संगठित प्रयासों से ही पूर्ण बनता है। अकेला चना तो कभी भी भाड़ फोड़ सकने में समर्थ नहीं होता। अपने जैसे विचारों के अनेक घनिष्ठों को साथ लेकर सहयोगपूर्वक बड़े कदम उठाना ही वह रीति-नीति है, जिसके सहारे अपनी और साथियों की प्रतिभा को चार चाँद लगते हैं।

सत्प्रवृत्तियों का समुच्चय परब्रह्म-परमात्मा प्रतिभाओं का पुंज है। उसके साथ सम्बन्ध जोड़ने पर संकीर्ण स्वार्थपरता में तो कटौती करनी पड़ती है, पर साथ ही यह भी सत्य है कि अग्नि के साथ संबंध जोड़ने वाला ईंधन का ढेर, ज्योतिर्मय ज्यालमाल की तरह दमकने लगता है। उत्कृष्टता के साथ जुड़ने वालों में से किसी को भी यह नहीं कहना पड़ता, कि उसे प्रतिभा परिकर के भाण्डागार में से किसी प्रकार की कुछ कम उपलब्धि हस्तगत हुई।

(वाङ्मय खण्ड 28 (सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण), पृष्ठ 2.18 से संकलित-सम्पादित)

देव संस्कृति विश्वविद्यालय

6TH CONVOCATION

वैश्विक स्तर पर सांस्कृतिक चेतना के विस्तार के गौरवशाली 20 वर्ष

शिक्षा, संस्कृति और समाज का संगम देव संस्कृति विश्वविद्यालय

मानव में देवत्व के उदय और धरती के स्वर्ग के अवतरण के संकल्प के साथ परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने अपनी लेखनी से एक दिव्य आकांक्षा की थी। उन्होंने लिखा है :-"एक ऐसा विश्वविद्यालय देश में होना ही चाहिए जो सच्चे मनुष्य, बड़े मनुष्य, महान मनुष्य, सर्वांगपूर्ण मनुष्य बनाने की आवश्यकता पूर्ण कर सके।"

देव संस्कृति विश्वविद्यालय ने अपनी विगत 20 वर्षों की यात्रा में पूज्य गुरुदेव के सपनों को साकार करने में ऐतिहासिक सफलता प्राप्त की है। जिन्होंने नवयुग अवतरण की ईश्वरीय योजना को साकार करने के लिए अपने समय का क्षण-क्षण और सामर्थ्य का कण-कण भगवान को समर्पित कर दिया, जिनके कोई संकल्प अधूरे नहीं रहे, उनका अद्वितीय विश्वविद्यालय का संकल्प भी देव संस्कृति विश्वविद्यालय के माध्यम से साकार हो रहा है।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय की शिक्षा पद्धति अद्वितीय है। यहाँ चल रहे 58 पाठ्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों को अर्थोपार्जन की दृष्टि से इतना समर्थ बनाया गया है, कि वे वैश्विक स्तर पर बड़े-बड़े प्रतिष्ठानों में महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ सँभाल रहे हैं। उत्कृष्ट चिंतन, अनुशासित जीवन, सामाजिक उत्थान की अभिलाषा, लक्ष्य के प्रति समर्पण, जाग्रत् संवेदनाएँ, कठिन परिश्रम आदि ऐसे सद्गुण हैं जो यहाँ की शिक्षा और नियमित दिनचर्या के साथ विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में समाहित किये जाते हैं। इन विशेषताओं से निखरे व्यक्तित्वों की आज समाज में हर जगह प्रतिष्ठा है।

यह विश्वविद्यालय प्राचीन काल के नालंदा और तक्षशिला विश्वविद्यालयों की भाँति ही पूरे विश्व में ऋषि प्रणीत अध्यात्मवाद और भारत की सनातन सांस्कृतिक चेतना का विस्तार कर रहा है। गुरुसत्ता के दिव्य संरक्षण, श्रद्धेया शैल जीजी, श्रद्धेय कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के विशेष पुरुषार्थ तथा प्रत्यक्ष मार्गदर्शन में इस विश्वविद्यालय ने राष्ट्र और संस्कृति के लिए समर्पित लगभग 10,000 अग्रदूत समाज को दिये हैं। उन्होंने करोड़ों लोगों को नई प्रेरणा और ऊर्जा से अनुप्राणित किया है। यह मात्र शिक्षण संस्थान ही नहीं, समाजोत्थान और राष्ट्र के नवनिर्माण के संकल्प के साथ युवाओं को गढ़ने वाला क्रान्तिकारी अभियान है।

संकाय और उनके विभाग

भारतीय विद्या संकाय (School of Indology)
• योग विज्ञान एवं मानव चेतना विज्ञान • पूरक एवं वैकल्पिक चिकित्सा • हिंदी • आयुर्वेद एवं समग्र स्वास्थ्य • वैदिक अध्ययन एवं संस्कृत • इतिहास एवं भारतीय संस्कृति • भारतीय शास्त्रीय संगीत

तकनीकी, संचार एवं प्रबंधन संकाय
School of Technology, Communication & Management
• कम्प्यूटर विज्ञान • गणित • पर्यटन एवं प्रबंधन • पत्रकारिता एवं जनसंचार • एनिमेशन एवं विजुअल इफैक्ट्स

मानविकी, समाज शास्त्र एवं बुनियादी पाठ्यक्रम संकाय
School of Humanities, Social Sciences & Foundation courses
• अंग्रेजी • शिक्षा शास्त्र • मनोविज्ञान • जीवन प्रबंधन • दर्शन शास्त्र, धार्मिक अध्ययन एवं देवत्व • वैज्ञानिक अध्यात्मवाद

औषधीय व सुगंधित पौध एवं स्थायित्व संकाय
School of Biological Sciences and Sustainability
• पर्यावरण विज्ञान • औषधीय एवं सुगंधित पौध स्थायित्व विभाग • पुनर्चक्रण एवं हस्त निर्मित उत्पाद

छात्र कल्याण संकाय - • कैरियर सपोर्ट गाइडेंस एण्ड प्रोग्रेशन • राष्ट्रीय सेवा योजना • एन.सी.सी. • स्काउट एण्ड गाइड • केन्द्रीय पुस्तकालय • याज्ञवल्क्य यज्ञ रिसर्च सेंटर • सांस्कृतिक प्रकोष्ठ • सृजना

विशिष्टता, विविधता और वैश्विक स्तर पर विस्तार की झाँकी

कुलाधिपति जी द्वारा आध्यात्मिक प्रबोधन

कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी द्वारा गीता और ध्यान की साप्ताहिक कक्षाओं के माध्यम से आध्यात्मिक प्रबोधन। इसके सत्परिणाम स्वरूप यहाँ के विद्यार्थी सारे विश्व में देव संस्कृति के ध्वज-वाहक, अग्रदूत बनकर सनातन सांस्कृतिक चेतना का विस्तार कर रहे हैं।

वैश्विक ख्याति प्राप्त युवा प्रतिकुलपति जी का मार्गदर्शन

यूएनओ जैसे अनेक अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठानों में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाले तथा भारत सरकार की कई संस्थाओं में मार्गदर्शक की भूमिका निभाने वाले देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का प्रत्यक्ष मार्गदर्शन सहज सुलभ है। उन्होंने लगभग पूरे भारतवर्ष का सघन भ्रमण कर करोड़ों युवाओं में नवचेतना का संचार किया है।

अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्ध और विस्तार

बाल्टिक सेंटर

एशिया में प्रथम बाल्टिक शिक्षण केन्द्र देव संस्कृति विवि. में स्थापित है। सन् 2016 में उत्तराखण्ड के तत्कालीन राज्यपाल डॉ. कृष्णकान्त पॉल ने तीनों बाल्टिक देश लात्विया, एस्टोनिया और लिथुआनिया के राजदूतों की उपस्थिति में इसका लोकार्पण किया। इस केन्द्र के माध्यम से भारत और बाल्टिक देशों के सांस्कृतिक सम्बन्धों पर विभिन्न परियोजनाओं, कार्यशालाओं के माध्यम से शोधकार्य हो रहे हैं। इसके परस्पर इरास्मस प्लस स्कॉलरशिप योजना के अन्तर्गत आचार्य एवं विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रवास होते रहते हैं।

दक्षिण एशियाई शान्ति एवं सुलह संस्थान

भारत के तत्कालीन उपराष्ट्रपति श्री वैंकया नायडू जी द्वारा 19 मार्च 2022 के दिन देसंविवि में दक्षिण एशियाई शान्ति एवं सुलह संस्थान का शुभारंभ किया गया। यहाँ विन्चेस्टर विश्वविद्यालय यू.के. और देसंविवि के संयुक्त तत्त्वावधान में विश्व में शान्ति एवं सद्भाव की स्थापना के लिए धार्मिक उपाय एवं कार्यक्रमों पर शोध चल रही है।

76 अंतरराष्ट्रीय शिक्षण संस्थानों के साथ एम.ओ.यू.

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के साथ अमेरिका, यू.के., बाल्टिक देश लात्विया, लिथुआनिया, एस्टोनिया, रूस, चीन, ऑस्ट्रेलिया सहित अनेक देशों के प्रतिष्ठित 76 शिक्षण संस्थानों के साथ शिक्षा अनुबंध हुए हैं। अर्जेंटिना, कनाडा, इक्वाडोर, ग्रीस, जर्मनी, हंगरी, इंडोनेशिया, मलेशिया, नेपाल, नीदरलैण्ड, पोलैण्ड, रोमानिया, दक्षिण अफ्रीका, स्विट्जरलैण्ड, ताइवान और वेस्ट इंडीज़ के शिक्षण संस्थानों के साथ भी देसंविवि के शैक्षिक समझौते हुए हैं। योग और भारतीय संस्कृति के संदर्भ में शोधकार्यों के लिए ये एमओयू हुए हैं।

सेण्टर फॉर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एण्ड रिसर्च (CAIR)

एक ऐसे अंतरराष्ट्रीय केन्द्र का निर्माण जो समय के साथ बढ़ती तकनीकों का प्रयोग करते हुए स्वास्थ्य एवं कृषि क्षेत्र में समाज की बेहतरी के लिए योगदान देता है। यह केन्द्र आध्यात्मिकता, वैदिक तकनीक, स्मार्ट दिमाग और प्रौद्योगिकियों की दिशा में काम करता है।

विशिष्ट सम्मान : देव संस्कृति विश्वविद्यालय को World Wide Accreditation of Yoga Organization ने उन पाँच संस्थाओं में चयनित किया है, जो अमेरिका एवं भारत में स्थित अन्य योग संस्थाओं का सर्वेक्षण करेंगी।

नोडल योग संस्थान : देव संस्कृति विश्वविद्यालय को भारत सरकार द्वारा 'नोडल योग संस्थान' के रूप में चयनित किया गया है।

भारत सरकार में प्रतिनिधित्व : भारत सरकार की ओर से प्रति-कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी को भारत सरकार की विभिन्न समितियों में सदस्य नामित किया गया है।

विशिष्ट परम्पराएँ

ज्ञानदीक्षा ज्ञानदीक्षा, एक अनूठी विशेषता रही है। भावी स्नातकों, परास्नातकों को ज्ञान साधना के उद्देश्य से, वेदमंत्रों की साक्षी में संकल्प सूत्रों में बांधना, गुरु-शिष्य परम्परा का द्योतक है। इसका सुखद परिणाम यह रहा कि हमारे विद्यार्थी देश, समाज और विश्वविद्यालय की सेवा में समर्पित हुए।

सांस्कृतिक शृंखला सांस्कृतिक प्रस्तुतियों की अनूठी शृंखला है। **'उन्नयन'** के माध्यम से आने वाले विद्यार्थियों का भावपूर्ण स्वागत किया जाता है, न कि उनकी रैगिंग की जाती है। **'उत्कर्ष'** के माध्यम से पर्व-त्यौहारों को सामूहिक रूप से मनाया जाता है। **'उत्सव'** खेल-कूद, सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों की कला, उनके कौशल को निखारने के प्रयास होते हैं। **'अभ्युदय'** के माध्यम से छात्र-छात्राओं का सर्वांगीण विकास साधने का प्रयास होता है।

परिवीक्षा Internship इंटर्नशिप के माध्यम से अर्जित ज्ञान को समाजहित में नियोजन करने का अभिनव प्रयोग। इसके माध्यम से अब तक देश के 50 लाख से ज्यादा विद्यार्थियों तक प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से देव संस्कृति जागरण का संदेश पहुँचाया।

अति विशिष्ट महानुभावों के सान्निध्य में हुए दीक्षान्त समारोह

प्रथम : उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह शेखावत जी

द्वितीय : माननीय राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम

तृतीय : माननीय राज्यपाल श्रीमती मार्गरेट अल्वा

चतुर्थ : माननीय राष्ट्रपति डॉ. प्रणव मुखर्जी

पंचम : नोबल पुरस्कार विजेता श्री कैलाश सत्यार्थी एवं डॉ. कृष्णकान्त पॉल, राज्यपाल उत्तराखण्ड

छठे दीक्षांत समारोह के कुछ उल्लेखनीय प्रसंग

- विश्वविद्यालय स्तर पर हर वर्ष छात्राओं ने ही स्वर्ण पदक प्राप्त किए।
- 138 छात्र-छात्राओं को विभागीय स्तर पर सर्वोच्च अंक प्राप्त करने के लिए स्वर्ण पदक प्रदान किए गए।
- स्वर्ण पदक प्राप्त करने वालों में 60 प्रतिशत छात्राएँ थीं।
- श्री ओम बिरला और डॉ. अमिता बिरला ने प्रज्ञेश्वर महादेव देवालय में पूजा-अर्चना की तथा शौर्य की दीवार पर जाकर उत्तराखण्ड के सर्वोच्च बलिदानी शहीदों को श्रद्धांजलि दी।
- देव संस्कृति विश्वविद्यालय परिवार ने मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर उपाधि प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों के संग अपने उत्साह और अनुभवों को साझा किया। छात्रों की लघु नाटिका ने खूब तालियाँ बटोरीं। गढ़वाली, असमिया, झारखण्डी, मराठी, राजस्थानी, ओडिया लोकनृत्य आकर्षण का केन्द्र रहे।
- पूर्व छात्रों के साथ विभागीय स्तर पर गोष्ठियाँ हुईं। परस्पर अनुभव साझा करते हुए सभी विश्वविद्यालय की वैश्विक प्रतिष्ठा और मिल रहे जनसम्मान से अभिभूत थे।
- कार्यक्रम का संसद टीवी के माध्यम से भी प्रसारण हुआ।
- इंटरनेट के माध्यम से इस कार्यक्रम से हजारों की संख्या में परिजन जुड़े रहे।

माननीय लोकसभा अध्यक्ष की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ देव संस्कृति विश्वविद्यालय का षष्ठम् समावर्त्तन समारोह

राष्ट्रवादी चिंतन और उदात्त व्यक्तित्व सम्पन्न युवा समाज को समर्पित

कुल उपाधि	पीएच.डी	स्नातकोत्तर	स्नातक	डिप्लोमा	प्रमाण पत्र
2659	70	941	1157	187	304

मंचासीन प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय जी, आदरणीय डॉ. अमिता बिरला, माननीय श्री ओम बिरला, कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव जी एवं पीएच.डी व स्वर्ण पदक विजेता विद्यार्थी

देव संस्कृति विश्वविद्यालय का छठवाँ दीक्षान्त समारोह दिनांक 1 नवम्बर 2022 को लोकसभा अध्यक्ष माननीय श्री ओम बिरला जी के मुख्य आतिथ्य और कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर माननीय लोकसभा अध्यक्ष की धर्मपत्नी डॉक्टर अमिता बिरला भी मंचासीन थीं। इस समारोह में वर्ष 2017 से 2022 तक विभिन्न पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने वाले 2659 छात्र-छात्राओं को उपाधियाँ प्रदान की गईं।

सह नौ यशः। सह नौ ब्रह्मवर्चसम्।

कार्यक्रम का शुभारंभ राष्ट्रगान एवं देवपूजन, अतिथि स्वागत के साथ हुआ। कुलपति श्री शरद पारधी जी ने अपने स्वागत उद्बोधन में देव संस्कृति विश्वविद्यालय की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस विश्वविद्यालय की स्थापना दैवीय योजना के अन्तर्गत हुई है। ऋषियों, तपस्वियों और संतों की साक्षी में इसकी प्राण प्रतिष्ठा की गई। उन्होंने कहा कि यहाँ आचार्य और विद्यार्थियों में 'सह नौ यशः। सह नौ ब्रह्मवर्चसम्।' का भाव पैदा किया जाना एक ऐसी उपलब्धि है, जिससे अभीष्ट लक्ष्य की ओर विद्यार्थियों की तीव्र गति से प्रगति होती है। अपने महान उद्देश्य के कारण हम विद्यार्थियों के भीतर एक उमंग और जोश पैदा करने में हम सफल रहे हैं।

डॉ. चिन्मय पण्ड्या, प्रतिकुलपति जी ने दीक्षांत समारोह की बताने से पूर्व माननीय श्री ओम बिरला जी और डॉ. अमिता बिरला को कर्मनिष्ठा एवं ईश भक्ति का अप्रतिम साधक बताकर जीवन विद्या के आलोक केन्द्र देव संस्कृति विश्वविद्यालय में स्वागत किया। इस अवसर पर उन्होंने उपाधि ग्रहण कर रहे विद्यार्थियों के भावी उत्तरदायित्वों की विस्तार से चर्चा की।

माननीय लोकसभा अध्यक्ष ने अपने अनुभव साझा करते हुए उपस्थित युवाओं को देव संस्कृति विश्वविद्यालय में विद्यार्जन के सौभाग्य एवं उनके राष्ट्र-धर्म का बोध कराया।

स्तुत्य है सेवा-समर्पण का भाव

माननीय कुलाधिपति जी ने कहा कि हमने जो पढ़ाया वह गुरुदेव का साहित्य ही पढ़ाया है। हमें यह देखकर प्रसन्नता होती है कि यहाँ के विद्यार्थी कैरियर की अच्छी-अच्छी संभावनाओं को छोड़कर समाज और संस्कृति की सेवाओं को प्राथमिकता देते हैं। बहुत से विद्यार्थी यहीं रुककर ब्राह्मणोचित जीवन में अध्ययन-अध्यापन की परम्परा को आगे बढ़ा रहे हैं।

प्रेरक उद्बोधन के पश्चात् मंचासीन अतिथियों ने विवि. एवं विभागीय स्तर पर स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाले 144 छात्र-छात्राओं को स्वर्ण पदक प्रदान किये। 70 विद्यार्थियों को पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गई। दर्शकों की करतल ध्वनि से पूरा मृत्युंजय सभागार गूँजता रहा। इस अवसर पर स्वर्ण पदक विजेता एवं सभी विद्यार्थियों के चेहरों पर अपार उत्साह झलकता रहा।

मंचासीन गणमान्यों के साथ कुलसचिव श्री बलदाऊ देवांगन, आमंत्रित महानुभाव, जन-प्रतिनिधि, उपस्थित माननीय विद्या परिषद, सदस्य, प्रबन्ध मण्डल सदस्य, व्यवस्थापक मण्डल सदस्य, प्रेस मीडिया, शासन-प्रशासन के अधिकारी, समस्त आचार्य, आचार्या, सहयोगी स्टाफ सदस्य, विद्यार्थीगण एवं उनके अभिभावक आदि उपस्थित थे। सायंकालीन रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने विद्यार्थियों के उल्लास को अनेक गुना बढ़ा दिया।

बायें मुख्य अतिथि एवं विश्वविद्यालय के गणमान्य अधिकारियों के संग पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थी, दायें उपाधि प्रदान करते बिरला दम्पति

देश के सांस्कृतिक अग्रदूत हैं यहाँ से शिक्षित विद्यार्थी

माननीय श्री ओम बिरला जी

वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने पूरे विश्व को दिशा और प्रगतिशील विचार दिए हैं। इस विश्वविद्यालय में आध्यात्मिकता और आधुनिकता का अद्भुत समन्वय है। यह युग का नेतृत्व करने वाली नई पीढ़ी को दिशा देने वाला विश्वविद्यालय है। आप ऐसे तपोनिष्ठ की तपोभूमि से संस्कृति, संस्कार और दिशा लेकर जा रहे हैं। हम भारत को जिस सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का देश बनाना चाहते हैं, उसमें आप अग्रदूत की भूमिका निभाएँगे। समाज को कर्मयोग और राष्ट्रवाद का पाठ पढ़ाकर भारत को सांस्कृतिक रूप से उन्नत बनाएँगे। अपने विशिष्ट ज्ञान के प्रकाश से समाज के अंतिम व्यक्ति को लाभान्वित करने का हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

हम उत्कृष्ट चिंतन वाले युवा गढ़ रहे हैं।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

देव संस्कृति विश्वविद्यालय परम पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी के संकल्प के अनुरूप विश्वमानवता का पथ प्रदर्शन कर सकने वाले उत्कृष्ट चिंतन से युक्त युवाओं को गढ़ रहा है। यह एकमात्र ऐसा विश्वविद्यालय है जहाँ प्राचीन काल की तरह ज्ञानदीक्षा की परम्परा अपनाई है, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ महानता के पथ पर अग्रसर होने का लक्ष्य हृदयंगम कराया जाता है। विद्यार्थियों और आचार्यों को इसके लिए आवश्यक अनुशासन एवं अनुबंधों के पालन का संकल्प कराया जाता है। युगऋषि के तप की ऊर्जा से अनुप्राणित इस देवभूमि का वातावरण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को हर क्षण सकारात्मक ऊर्जा देता और निखारता है।

ये युवा जहाँ जायेंगे, वहाँ नया सवेरा लाएँगे

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

देव संस्कृति विश्वविद्यालय ने क्रान्तिकारी युवा गढ़े हैं, जिनके भीतर परिवर्तन की आग है। अपने अंतस् की परिष्कृत-परिमार्जित लौ के साथ ये विद्यार्थी जहाँ भी जाएँगे वहाँ नया सवेरा कर देंगे। हमारे विद्यार्थी जहाँ जाएँगे, वहाँ पर मानवीय चेतना के रूपांतरण और भावनात्मक नवनिर्माण के प्रभाव से प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। ये क्रान्तिकारी विद्यार्थी जहाँ भी जायेंगे वहाँ अपनी उपस्थिति से प्रकाश की नई किरणों को जन्म दे रहे होंगे।

विश्वविद्यालय स्तर पर स्वर्ण पदक विजेता बेटियाँ

2017
उर्वशी शर्मा,
एमए,नैदानिक मनोविज्ञान

2018
वंदना आर्य,
एमए,
संस्कृत

2019
चित्रा कश्यप एवं
बी.एससी.
2021
नैदानिक मनोविज्ञान

2020
रूपम
एम.एससी.
अनुप्रयुक्त औषधीय पादप विज्ञान

2022
अंजलि पुंडीर
एम.एससी.
पर्यावरण विज्ञान

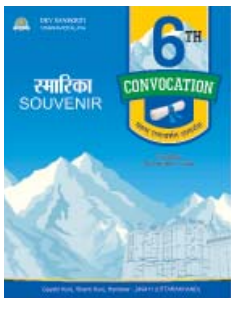

साहित्य विमोचन

- छठे दीक्षांत समारोह की स्मारिका
- विवि. की ई-पत्रिका रिनांसा
- 'संस्कृति संचार' का अभिनव अंक
- इण्टर डिसिप्लिनरी यज्ञ रिसर्च जर्नल
- अनाहत पत्रिका • वार्षिक रिपोर्ट
- ईआरपी.

(आई.टी. विभाग, शांतिकुंज)

विश्वविद्यालय परिसर में वृक्षारोपण करते माननीय श्री ओम बिरला दम्पति

स्वर्ण पदक विजेता विद्यार्थियों की अभिव्यक्तियाँ

जीवन लक्ष्य का बोध अनूठी विशेषता है

इरास्मस प्लस स्कॉलरशिप एवं स्टूडेंट एक्सचेंज प्रोग्राम के अंतर्गत पोलैण्ड जाने का अवसर मिला, यह मेरा सौभाग्य है। यहाँ से प्राप्त सब कुछ देश और समाज के लिए होम करने का विश्वास दिलाती हूँ। अपने जीवन के लक्ष्य का बोध कराना देसंविवि की अनूठी विशेषता है।

स्मृति श्रीवास्तव, एम.एससी. नैदानिक मनोविज्ञान

हौसले बढ़ाने वाली ऊर्जा है यहाँ

यहाँ की सकारात्मकता एवं ऊर्जा से ऐसा भावनात्मक, मानसिक एवं शारीरिक बल मिलता है, जिससे यह उक्ति साकार होती दिखाई देती है कि कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

अंजली पुंडीर, एम.एससी.
पर्यावरण विज्ञान

माता-पिता सदृश प्यार मिला

यहाँ पर माता एवं पिता के सदृश ऐसा प्यार प्राप्त होता आया है, जो हृदय को भावविभोर कर देता है, उसकी अभिव्यक्ति करते हुए कंठ अवरुद्ध हो जाता है।

-रूपाली यदुवंशी, संस्कृत

आनन्द अपने खेत में प्रयत्नपूर्वक स्वयं उगाना पड़ता है। दूसरों की फसल काटकर कोठा भर लेने की चतुरता इस क्षेत्र में काम नहीं आती।

देव संस्कृति विवि. के प्रतिकुलपति जी द्वारा उत्तर प्रदेश की तरुणाई का पथ प्रदर्शन

आत्मीयता और उल्लास से भरे अविस्मरणीय कार्यक्रमों के माध्यम से कार्यकर्त्ताओं में नवचेतना का संचार हुआ

महापुरुषों की राह पर चलते हुए अपनी संस्कृति को अपनाएँ, समाज में व्याप्त हताशा, निराशा, अनास्था का कुहासा मिटाएँ

108 कुण्डीय यज्ञ में युवा सम्मेलन
चारबाग रेलवे स्टेडियम, लखनऊ

चारबाग रेलवे स्टेडियम लखनऊ में आयोजित 108 कुण्डीय यज्ञ के अंतर्गत दिनांक 7 अक्टूबर को दीपयज्ञ एवं युवा सम्मेलन का भव्य आयोजन हुआ। इस अवसर पर पधारे देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने युवाओं को भौतिकतावादी जीवन के अंधानुकरण के दुष्प्रभाव से उबारने के लिए मर्मस्पर्शी संदेश दिया। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश के खाद्य एवं रसद राज्य मंत्री श्री सतीश शर्मा भी मंचासीन थे।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि देश के युवाओं ने वैभव और समृद्धि के क्षेत्र में बहुत तरक्की की है, लेकिन वह बाहरी चकाचौंध में खोते जा रहे हैं। वे मन से दरिद्र और दिल से दिवालिया होते जा रहे हैं। भारत के युवा अन्य देशों से अधिक सामर्थ्यवान,

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी उत्तर प्रदेश के मुख्य सचिव आदरणीय श्री दुर्गा शंकर मिश्रा जी से शिष्टाचार भेंट करने पहुँचे। गायत्री मंत्र का दुपट्टा ओढ़ाकर और देवस्थापना चित्र भेंट कर उन्हें सम्मानित किया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी लखनऊ में आयोजित युवा सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए। उनके बायें मंचासीन प्रदेश के मंत्री श्री सतीश शर्मा तथा दायें शान्तिकुञ्ज के टोली नायक श्री दुबे जी

संवेदनशील और क्षमतावान हैं। उन्हें अपने भीतर झाँकने, विवेक को जगाने एवं अपनी श्रेष्ठताओं को अपनाने की जरूरत है। यदि सोच बदल जाए तो जीवन की समस्याएँ स्वतः ही सुलझती चली जाएँगी। इस अवसर पर शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने युवाओं से भीतर का ज्ञानदीप जलाने, देवत्व को जगाने और महापुरुषों की राह पर चलते हुए संसार में छाया हताशा, निराशा, अवसाद, अनास्था, अविश्वास आदि का कुहासा मिटाने के लिए आगे आने का आह्वान किया।

आद. डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी मंत्री जी को देवस्थापना चित्र भेंट करते हुए

8 अक्टूबर को यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर भी डॉ. चिन्मय जी का उद्बोधन हुआ। उन्होंने श्रद्धालुओं को गायत्री एवं यज्ञ से जीवन के परिष्कार के विधान की जानकारी प्रदान की।

संस्कार : 108 कुण्डीय महायज्ञ में बड़ी संख्या में विभिन्न संस्कार हुए।
सेवा : पीड़ित मानवता के हितार्थ अंगदान, नेत्रदान, रक्तदान शिविरों का आयोजन भी किया गया था।
विशिष्ट गणमान्य : कार्यक्रम में प्रदेश के मंत्री श्री राकेश सचान, पूर्व उप मुख्यमंत्री श्री दिनेश शर्मा, महापौर सुश्री संयुक्ता भाटिया, एमएलसी श्री मुकेश शर्मा सहित अनेक प्रतिष्ठित गणमान्यों ने भाग लिया।

दूसरों की भलाई करने में ही सच्चा सुख मिलता है

परम पूज्य गुरुदेव के साहित्य में खोजें वर्तमान समय की समस्याओं का समाधान

इटावा में कार्यकर्त्ता गोष्ठी

डॉ. चिन्मय जी ने इटावा नगर के इटावा क्लब में आयोजित कार्यकर्त्ता संगोष्ठी को सम्बोधित किया। इस अवसर पर उपस्थित कार्यकर्त्ताओं को उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव के साहित्य में वर्तमान समय की समस्याओं का समाधान खोजने और उससे समाज को लाभान्वित करने की प्रेरणाएँ दीं।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने गायत्री साधना को आत्मोत्थान और जीवन के कल्याण का सर्वोत्तम साधन बताया। उन्होंने कहा कि हमें इस बात को जन-जन तक पहुँचाना होगा कि गायत्री उपासक में जनहित

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी इटावा में आयोजित कार्यकर्त्ता सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए

की भावना विकसित होती जाती है। दूसरों की भलाई करने में ही सच्चा सुख मिलता है। आरंभ में श्री ब्रह्मानन्द दुबे ने प्रतिकुलपति जी का स्वागत किया। गोष्ठी में श्री विजय सिंह यादव, जगदीश यादव आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम सम्पन्न कराने शान्तिकुञ्ज से श्री जयसिंह यादव एवं श्री विनय केसरी की टोली पहुँची थी।

जीवन की सही राह छोड़ रहे युवाओं को दिशा दिखाने की आवश्यकता है

सिकन्दराबाद में दम्पती एवं युवा शिविर

बुलंदशहर जिले के सिकन्दराबाद के सरस्वती शिशु मंदिर परिसर में 24 कुण्डीय यज्ञ वर्षा की प्रतिकूलताओं के बावजूद अत्यंत सफल और उत्साहवर्धक रहा। कार्यक्रम संयोजक श्री शैलेष कुमार ने बताया कि स्थानीय सांसद डॉ. भोला सिंह, विधायक श्री प्रदीप चौधरी एवं लक्ष्मीराज सिंह भी इस यज्ञ के यजमान थे।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी युवा दम्पति एवं युवा शिविर के मुख्य वक्ता थे। उन्होंने युवाओं का पथ प्रदर्शन करते हुए कहा कि आज का युवा सही राह छोड़कर भ्रांति और आकर्षणों में फँस रहा है। उन्हें परम पूज्य

डॉ. चिन्मय जी महायज्ञ की तैयारियों में पिछले एक माह से जुटी बहिनों की टोली से मिले और उन्हें सम्मानित किया।

सिकन्दराबाद के यज्ञ में उत्साहित हुए श्रद्धालु

गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के विचारों से जुड़ना चाहिए, ताकि वह अपना और समाज का उत्थान कर सकें। यज्ञ संचालन के लिए शान्तिकुञ्ज से प्रो. प्रमोद भटनागर, श्री जयसिंह यादव, श्री शशिकान्त सिंह, श्री ओंकार पाटीदार एवं संगीतज्ञ भाइयों की टोली पहुँची थी।

आत्मीयता संवर्धन का अविस्मरणीय अध्याय

देवस्थापना, साहित्य स्थापना एवं शक्तिपीठ व विद्यालय में संगोष्ठियाँ

बायें डॉ. किरन सौजिया सीनियर सेकेंड्री स्कूल में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि को सम्मानित करते निदेशक डॉ. अशोक कुमार और दायें शक्तिपीठ पर आयोजित युवा सम्मेलन को सम्बोधित करते आद. डॉ. चिन्मय जी

मैनपुरी। उत्तर प्रदेश

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के युवा प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय जी पहली बार मैनपुरी के प्रवास पर पहुँचे थे। वहाँ अनेक घरों में देवस्थापना और आत्मीयता संवर्धन के सघन कार्यक्रम हुए। अजीतगंज गाँव के 24 घरों में युग साहित्य की स्थापना की गई। गायत्री शक्तिपीठ में श्री सुरेश चंद जी के सानिध्य में दीपयज्ञ के साथ उपस्थित श्रद्धालुओं को अभिभूत कर देने वाला आत्मीयता संचार एवं संवाद का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। गायत्री प्रज्ञापीठ में भी दर्शन एवं आत्मीयता संवर्धन परक संगोष्ठी सम्पन्न हुई।

8 अक्टूबर को मैनपुरी के डॉ. किरन सौजिया सीनियर सेकेंड्री स्कूल में संगोष्ठी आयोजित हुई। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति जी ने मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होकर बच्चों को महापुरुषों की राह पर चलने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि हर व्यक्ति में अकूत क्षमता विद्यमान है। यदि सही लक्ष्य और कड़ी मेहनत के साथ सतत प्रयास किए जायें तो हर व्यक्ति महापुरुषों की श्रेणी में पहुँच सकता है।

युग गंगोत्री से आए दिव्य चेतना के प्रवाह का स्वागत सर्वश्री संजय सिंह, आरके यादव, देवनंदन, प्रधानाचार्य मयंक यादव, स्तुति यादव आदि ने किया। विद्यालय के निदेशक डॉ. अशोक कुमार ने शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया।

मिशन की नींव रखने वाली दो विशिष्ट विभूतियों का सम्मान

सुप्रसिद्ध कवि श्री लाखन सिंह भदोरिया

मैनपुरी-एटा क्षेत्र के प्रवास में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने मिशन की नींव के दो विशिष्ट पत्थरों का अभिनन्दन करते हुए गौरव की अनुभूति की। सन् 60 के दशक से अखण्ड ज्योति पत्रिका में जिनकी कविताएँ प्रकाशित होती रही हैं, जिनके गीत हर युग निर्माणी की श्रद्धा का सिंचन करते हैं, उमंग और उत्साह बढ़ाते हैं, ऐसे वयोवृद्ध कवि श्री लाखन सिंह भदोरिया से उनके घर पर 9 अक्टूबर को मुलाकात हुई। डॉ. चिन्मय जी ने उनका गायत्री मंत्र की चादर ओढ़ाकर एवं देवस्थापना चित्र भेंट कर सम्मान किया।

श्री लाखनसिंह भदोरिया परम पूज्य गुरुदेव के कुछ घनिष्ठ और आत्मीय जनों में से एक रहे हैं। उनके कुछ सुप्रसिद्ध गीत हैं-उठो, उठो अब हे मातृशक्ति, समय प्रभाती सुना रहा है..., सौंदर्य से तुम्हारे सुंदर जहान सारा..., जीवन बड़ा महान भाईयो जीवन बड़ा महान, इस काया में ही जन्मे हैं राम कृष्ण भगवान..., आ जाना बन ध्यान हमारे कीर्तन में... आदि।

सुश्री नारायणी देवी, पलाकसेर, बुलंदशहर

9 अक्टूबर 2022 को ही बुलंदशहर के पलाकसेर गाँव में सुश्री नारायणी देवी जी से भेंट करने पहुँचे। वे परम वंदनीया माताजी द्वारा चलाए गए पहले महिला मंडल के 5 सदस्यों में से अकेली जीवित सदस्य हैं। समाज के प्रचण्ड विरोध के बावजूद उन्होंने अपने गाँव में पाँच कुण्डीय यज्ञ करने का संकल्प लिया। परम पूज्य गुरुदेव ने सन् 1958 में 5 दिन रहकर यह गायत्री यज्ञ कराया था। यज्ञ इतना सफल और प्रभावशाली था कि कट्टर विरोधी भी पूज्य गुरुदेव के समर्थक और सहयोगी बन गए।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी नारी सशक्तीकरण वर्ष के उपलक्ष्य में सुश्री नारायणी देवी जी को सम्मानित करने उनके गाँव पहुँचे थे। इस अवसर पर सन् 1958 के ऐतिहासिक यज्ञ की याद में गाँव में पूज्य गुरुवर द्वारा लगाए गए पीपल के वृक्ष के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

यदि तुम भगवान के साथ निष्कपट भाव से रहना चाहते हो तो विश्व में किसी के भी साथ कपट मत रखो, क्योंकि विश्व में वह प्रभु ही तो व्याप्त है।

अनाथालय के बच्चों और बुजुर्गों को दी सत्प्रेरणाएँ

पुणे। महाराष्ट्र

विचार क्रान्ति अभियान के लिए समर्पित युवा युगसृजेता श्री राजेश टेकरीवाल 16 अक्टूबर-रविवार को माहेर अनाथालय पहुँचे। वहाँ बच्चों को दैनंदिन जीवन में व्यक्तित्व परिष्कार के लिए सत्प्रेरणाएँ दीं। सभी बच्चों को धीर धारा (हरिये न हिम्मत) पुस्तक एवं सद्वाक्यों के स्टिकर्स दिए एवं उनका पाठ कराया। कुछ अध्याय पढ़ने के बाद बच्चों ने स्वयं जीवन में अपनाने वाली अच्छी आदतें गिनाईं और उन्हें अपनाने के संकल्प लिए एवं पुस्तक के नित्य स्वाध्याय का वचन दिया। इस कार्यक्रम से वहाँ रह रहे बुजुर्ग भी बहुत प्रसन्न हुए।

पिछड़ों के चेहरों पर खुशियाँ लाकर मनाया त्यौहार

श्रमशील गरीबों को राशन के किट दिये

गायत्री परिवार से राशन के किट पाकर गद्गद हुए लोग

ठाणे। महाराष्ट्र : गरीबों और जरूरतमंदों की सेवा करना गायत्री की पूजा के समान है। यह विचार दिया, मुम्बई के सदस्यों की आध्यात्मिक सोच में गहराई से समाया हुआ है। इसी सोच और अंत्योदय की भावना के साथ दिया ठाणे ने चेतना दिवस और दीपावली पर्व के उपलक्ष्य में 24 अक्टूबर 2022 को समाज के गरीब लोगों में किराने की किट वितरित की।

लोकमंगल के पथ पर सदैव अग्रणी रहते हैं स्निग्धा और विभोर

स्निग्धा और विभोर श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी से प्रेरित कई युवाओं में से हैं। उन्होंने स्वयं को मिशन की गतिविधियों के लिए समर्पित किया है। शिक्षा, गरीबी उन्मूलन और समाज सेवा के अन्य अभियानों के अन्तर्गत वे दोनों गरीबों और जरूरतमंदों की अथक सेवा में तत्पर रहते हैं। अधिक से अधिक लोग आवश्यक सहायता प्राप्त करने के साथ सन्मार्ग की ओर प्रेरित हों, गायत्री उपासना से स्वयं का जीवन सँवार सकें, ऐसे प्रयास उनके द्वारा किए जाते हैं। उन्हें गर्व है कि सामान्य जीवन जी रहे लोगों को ऊँचा उठाने में युगऋषि के मानस पुत्र अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं।

73वाँ वृक्षारोपण सप्ताह

विद्यालय में वृक्षारोपण से पूर्व उत्साहभरे क्षण

जहानाबाद। बिहार : प्रज्ञा युवा प्रकोष्ठ जहानाबाद द्वारा 73वें रविवासरीय वृक्षारोपण कार्यक्रम के अंतर्गत घोषी प्रखण्ड के रा. उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय सोनवां में विभिन्न प्रकार के 100 वृक्षों की पौध लगाई गई। इस अवसर पर विद्यालय के प्रभारी प्रधानाध्यापक श्री अजीत कुमार ने कहा कि वृक्षारोपण ही पर्यावरण संतुलन का सर्वोत्तम उपाय है। वृक्षारोपण अभियान प्रकृति की सुरक्षा के लिए अनमोल एवं अनुपम प्रयास है। सेवानिवृत्त हो रहे श्री अजीत कुमार जी को गायत्री परिवार ने मंत्र चादर, साहित्य एवं पुष्प देकर सम्मानित भी किया गया। सर्वश्री रंगेश कुमार, बचन देव कुमार, श्रीकांत, संजय कुमार, श्यामनारायण कुमार, कृष्णबल्लभ शर्मा आदि मुख्य रूप से सक्रिय रहे।

कोविड काल की दिवंगत आत्माओं की शान्ति एवं वातावरण शुद्धि के लिए यज्ञ

चित्तौड़गढ़। राजस्थान

श्री राजाराम सुखवाल उपनिदेशक उद्यान विभाग द्वारा सीताफल उत्कृष्ट केंद्र उद्यान विभाग में दिनांक 19 अक्टूबर 22 के दिन गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। उल्लेखनीय है कि राज्य सरकार ने कोविड-19 महामारी के समय सीताफल विज्ञान केंद्र को अधिकृत करके कोविड उपचार केन्द्र बनाया दिया था। मरीजों के उपचार के समय अनेक लोगों की मौत हो गई थी। उन्हीं दिवंगत आत्माओं को श्रद्धाञ्जलि देने, उनकी शान्ति-सद्गति की प्रार्थना करने और केन्द्र के वातावरण की शुद्धि के लिए गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया था।

कार्यक्रम का संचालन श्री दयाराम ने किया। गायत्री परिवार की ओर से श्री रमेश चंद्र पुरोहित ने बताया कि यज्ञ के समय सीताफल उद्यान केंद्र के पूरे परिसर को गंगाजल एवं गोमूत्र का छिड़काव कर पूरे परिसर का शुद्धिकरण किया गया। इस अवसर पर श्री मुकेश कुमार धाकड़ कृषि अनुसंधान अधिकारी, श्री सत्यदेव शर्मा सहायक कृषि अधिकारी सहित गायत्री परिवार चित्तौड़गढ़ एवं कई गणमान्य कर्मचारी और अधिकारी उपस्थित रहे।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा

नवीन निर्मित जिले में मिली अच्छी सफलता

मोहला मानपुर अंबागढ़ चौकी। छ.ग.

छत्तीसगढ़ प्रान्त के अभिनव जिले मोहला मानपुर अंबागढ़ चौकी में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के आयोजन में अच्छी सफलता मिली। दिनांक 15 अक्टूबर 2022 को आयोजित इस परीक्षा में मोहल्ला ब्लॉक से 3906 विद्यार्थी, मानपुर ब्लॉक से 1277 विद्यार्थी एवं अंबागढ़ चौकी ब्लॉक से 1690; इस प्रकार कुल 6873 विद्यार्थियों ने भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में भाग लिया। परीक्षा कक्षा पाँचवी से बारहवीं तक एवं महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों के लिए आयोजित हुई।

जिला संयोजक एवं परीक्षा के आयोजन में सक्रिय योगदान देने वाले कार्यकर्त्ताओं ने प्रतिभागी विद्यालयों में बच्चों के व्यक्तित्व विकास सम्बन्धी अन्य गतिविधियाँ आरम्भ करने और अगले वर्ष दूने उत्साह के साथ सक्रियता अपनाने का उत्साहभरा संकल्प व्यक्त किया।

बाल निर्माण मंत्रलेखन साधना

बच्चों ने लिखे 10 हजार गायत्री महामंत्र

मुजगहन, धमतरी। छत्तीसगढ़

गायत्री मंत्र लेखन एक साधना है। मंत्र-जप की अपेक्षा मंत्र लेखन का पुण्य-प्रभाव दस गुना अधिक माना गया है। गायत्री मंत्र लेखन से मन की एकाग्रता बढ़ती है। विद्यार्थियों में मानसिक एवं बौद्धिक विकास होता है, पढ़ने के प्रति रुचि बढ़ती है, उनकी प्रतिभा एवं क्षमता में अप्रत्याशित वृद्धि होती है। यही विद्यार्थी आगे चलकर प्रतिभावान, गुणवान, संस्कारवान एवं महान बनते हैं।

इसी लक्ष्य के साथ गायत्री परिवार मुजगहन ने दीपावली के पावन अवसर पर पढ़ने वाले 20 से अधिक छात्र-छात्राओं को गायत्री मंत्र लेखन पुस्तिका वितरण कर उन्हें 10 हजार गायत्री मंत्र लेखन करने के लिए प्रेरित किया गया। जिला समन्वयक श्री दिलीप नाग ने बताया कि गायत्री परिवार ग्राम मुजगहन में कई वर्षों से बाल संस्कार शाला का सफल संचालन किया जा रहा है। इसके माध्यम से सैकड़ों बच्चों के सद्गुणी और संस्कारवान बनाया गया है। इस हेतु गायत्री मंत्र जप, गायत्री मंत्र लेखन, विविध प्रतियोगिताएँ जैसी अनेक रचनात्मक गतिविधियाँ चलाई जाती हैं।

मंत्र लेखन पुस्तिका वितरण के अवसर पर महिला मण्डल मुजगहन की श्रीमती डामिन नाग द्वारा बच्चों का अक्षत रोली लगाकर उनका सम्मान कर अनेक सत्प्रेरणाओं के साथ दीपावली की शुभकामनाएँ दी गईं। मंत्र लेखन पुस्तिका वितरण के समय कुमारी पायल, काव्या, मेघा, रूपाली, धारिणी, हर्षिता, लक्ष्मीकांत, ईशांत, दीपिका, खुशबू नाग, हर्षिता नाग, निधि नाग, तुलसी, सीमा, गुलशन, टोकेश, साक्षी, सौरभ, गामिनी, रौनक सहित बहुत बड़ी संख्या में बच्चे उपस्थित थे।

मंत्र लेखन के लिए उत्साहित बाल संस्कार शाला के बच्चे

15 दिवसीय पुस्तक मेला

पुस्तक मेले में सेवाएँ प्रदान करने वाले समर्पित युवा कार्यकर्त्ताओं की टोली

कोटा। राजस्थान

दशहरा-दिवाली की पावन वेला में कोटा में हर वर्ष राष्ट्रीय मेले का आयोजन होता है। इस वर्ष यह 15 दिवसीय मेला 6 अक्टूबर से 22 अक्टूबर तक की तिथियों में आयोजित हुआ था। स्थानीय गायत्री परिवार ने इसमें भाग लेते हुए विशाल युग साहित्य प्रदर्शनी एवं पुस्तक मेले का आयोजन किया गया।

पुस्तक मेले में परम पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा रचित वाङ्मय, वेद एवं उपनिषदों सहित समस्त साहित्य को आधे मूल्य पर उपलब्ध करवाया गया था। साहित्य पटल पर आने वाले प्रत्येक नवागन्तुक को खरीदे गए साहित्य के साथ मासिक पत्रिका अखंड ज्योति एवं युग निर्माण योजना का एक-एक अंक तथा सद्वाक्य स्टीकर भेंट किए गये। आसपास के छोटे-बड़े शहरों एवं गाँवों से आए नए परिजनों ने विचार क्रांति साहित्य में बहुत अच्छी रुचि दिखाई व ज्ञान के विशाल खजाने से परिचित भी हुए। बहुत से परिजन मासिक पत्रिकाओं के सदस्य भी बने।

जगह-जगह लगते हैं एक दिवसीय पुस्तक मेले

कोटा में पिछले कई वर्षों से गायत्री परिवार व गायत्री परिवार की युवा शाखा 'दिया' द्वारा राष्ट्रीय दशहरे मेले में विशाल पुस्तक मेले का आयोजन होता आ रहा है, जिसमें गायत्री परिवार के वरिष्ठ एवं युवा भाई-बहन पूरे उत्साह से अपना समय व श्रमदान करते हैं। इसके अलावा इन शाखाओं द्वारा ज्ञानरथ के माध्यम से भी अलग-अलग स्थानों पर एक-एक दिवसीय साहित्य स्टॉल लगाए जाते हैं।

विद्यालय में समग्र वाङ्मय की स्थापना

दिनांक 18 अक्टूबर को अखिल विश्व गायत्री परिवार की ज्ञानयज्ञ शाखा प्रयागराज द्वारा राजा कमलाकर इण्टर कॉलेज शंकरगढ़ प्रयागराज में वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा रचित वाङ्मय के सम्पूर्ण 79 खण्ड, प्रज्ञा पुराण, चारों वेद, 108 उपनिषद् के तीनों खण्ड, वेदान्त दर्शन, आयुर्वेद का प्राण-वनौषधि विज्ञान, गायत्री महाविज्ञान, यज्ञ चिकित्सा, बाल निर्माण की कहानियाँ, महापुरुषों की जीवनियाँ, हमारी वसीयत और विरासत आदि 200 से अधिक पुस्तकों की स्थापना कराई गई। यह स्थापना इंजीनियर एल.बी. सिंह, भूतपूर्व सूबेदार मेजर आर.डी.एस.ओ. लखनऊ के सौजन्य से की गई है। उनके द्वारा 11 शिक्षण संस्थानों में युगऋषि का वाङ्मय स्थापित करने का संकल्प लिया गया था, जो इस स्थापना के साथ पूरा हुआ। श्री अजय प्रताप सिंह ने इस अवसर पर अपने विद्यालय की प्रार्थना में गायत्री मंत्र और भावार्थ को शामिल करने की घोषणा की।

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

श्रीमती शोभा शुक्ला, शान्तिकुञ्ज की जीवनदानी कार्यकर्त्ता

शान्तिकुञ्ज के समर्पित कार्यकर्त्ता श्री रामसहाय शुक्ला जी की धर्मपत्नी श्रीमती शोभा शुक्ला का दिनांक 2 अक्टूबर 2022 को आकस्मिक निधन हो गया। वे 67 वर्ष की थीं। वे सन् 1979 से सपरिवार शान्तिकुञ्ज में रहकर गुरुकार्यों में योगदान दे रही थीं। उनके सौम्य स्वभाव, सेवा के संस्कार और समर्पण के कारण उनके पूरे परिवार को गुरुकार्यों में प्रवृत्त होने का भरपूर अवसर मिलता रहा।

श्रीमती सूर्यप्रभा, शाहपुर, कांगड़ा। हिमाचल प्रदेश

अश्वमेध यज्ञ शिमला में शानदार सक्रियता का अविस्मरणीय परिचय देने वाली शाहपुर निवासी श्रीमती सूर्यप्रभा जी का आकस्मिक निधन हो गया। उन्होंने पूरे प्रदेश में मिशन के विस्तार में महत्त्वपूर्ण दिया है।

श्रीमती छाया देवी गुप्ता। श्रावस्ती। उत्तर प्रदेश

गायत्री प्रज्ञापीठ नासिरगंज, श्रावस्ती से जुड़ी कार्यकर्त्ता श्रीमती छाया देवी गुप्ता का 50 वर्ष की उम्र में दिनांक12 सितम्बर 2022 को निधन हो गया। वे सन् 1987 से युग चेतना विस्तार के कार्यों में सक्रिय रहीं। रीवा, नागौद एवं सतना गायत्री शक्तिपीठों में उन्होंने जीवनदानी कार्यकर्त्ता के रूप में सेवाएँ प्रदान कीं।

पं बाबूलाल तिवारी, सिमरिया, पन्ना। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार सिमरिया के समर्पित परिजन पं बाबूलाल तिवारी, सेवानिवृत्त शिक्षक का 85 वर्ष की आयु में 20 सितंबर 2022 को देहावसान हो गया। वे गायत्री के अत्यंत प्राणवान एवं निष्ठावान साधक थे। उन्होंने गायत्री परिवार की शाखा का बड़ी कुशलता के साथ संचालन कर रहे थे।

आज अणुशक्ति हिंसा का सबसे समर्थ आधार माना जाता है। वह दिन दूर नहीं जब जाग्रत् जनशक्ति को प्रगति का सबसे बड़ा माध्यम माना जाएगा। - महात्मा विनोबा

समुन्नत समाज की संरचना के लिए चल रहे सेवा और जनजागरूकता परक अभियान

रक्तदान-महादान का यशस्वी अभियान

थैलिसिमिया से पीड़ित बच्चों के लाभार्थ

ठाणे। महाराष्ट्र

गायत्री परिवार मुम्बई आजादी के अमृत महोत्सव में भागीदारी करते हुए पीड़ित मानवता के हितार्थ जगह-जगह रक्तदान शिविरों का आयोजन कर रहा है। एक शिविर ठाणे में अर्पण ब्लड बैंक के सहयोग से आयोजित किया गया। यह संस्था थैलिसिमिया के मरीज बच्चों के लिए रक्त संग्रह करती है, जिन्हें बार-बार रक्त बदलने की आवश्यकता होती है। इसमें 75 यूनिट रक्तदान हुआ।

एक और रक्तदान शिविर खारघर में केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल और टाटा

कैंसर अस्पताल के सहयोग से आयोजित किया गया। सीआईएसएफ के कमाण्डेण्ट ने दीप प्रज्वलन कर शिविर का उद्घाटन किया। कुल 36 यूनिट रक्तदान हुआ।

आपत्तिकाल में हजारों लोगों की सहायता की

जहानाबाद। बिहार

गायत्री शक्तिपीठ जहानाबाद के युवा मंडल द्वारा 'दिया रक्त अग्रदूत इकाई' टीम का गठन किया गया है। इसके सदस्यों का दायित्व है जरूरतमंदों के फोन कॉल आने पर उनके लिए रक्त उपलब्ध कराना। इस इकाई में पूरे बिहार एवं अन्य प्रान्तों के भी युवा पंजीकृत हैं। अब तक यह इकाई हजारों जरूरतमंदों को रक्त उपलब्ध करा चुकी है। ईकाई के सदस्य स्वयं रक्तदान करते हैं अथवा अपने संपर्क सूत्रों से उसकी व्यवस्था करने में मदद करते हैं।

दिया रक्त अग्रदूत इकाई जहानाबाद के संचालक श्री अंकित कुमार गुप्ता का कहना है कि उनके दल द्वारा विगत चार वर्षों से यह सेवाएँ प्रदान की जा रही है। दिन हो या रात, हर समय यह सेवाएँ दी जाती हैं। हर वर्ग के लोग इन सेवाओं का लाभ उठा रहे हैं और गायत्री परिवार के मानवतावादी नेक

कार्य हेतु धन्यवाद दे रहे हैं। पूरे बिहार प्रान्त और कभी-कभी तो अन्य प्रान्तों से भी रक्त की माँग के फोन कॉल्स आते हैं, जिनका समाधान किया जाता है। पीड़ित मानवता की भलाई के लिए चलाए जा रहे इस रक्तदान कार्यक्रम में गायत्री शक्तिपीठ जहानाबाद के मुख्य ट्रस्टी श्री शारदा नंदन प्रसाद सिंह एवं शक्तिपीठ प्रभारी श्री मुकेश कुमार महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

कैंसर पीड़ितों का यज्ञ-चिकित्सा से उपचार

मनोबल और आत्मविश्वास बढ़ाकर की जा रही है सहायता

कैंसर पीड़ितों के हॉस्टल में यज्ञ करते मरीज और उनके परिजन

सायन, मुम्बई। महाराष्ट्र

शरद पूर्णिमा के दिन गायत्री परिवार द्वारा विश्व हिंदू परिषद द्वारा संचालित कैंसर हॉस्टल, सायन कोलीवाड़ा में कैंसर के मरीजों के लाभार्थ पाँच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ किया। यज्ञ में कैंसर के उपचार में लाभदायक विशेष औषधियों का प्रयोग किया गया तथा मरीजों को नित्य यज्ञ करने की प्रेरणा भी दी गई। गायत्री परिवार मुम्बई के कार्यवाहक श्री मनुभाई पटेल ने बताया कि पीड़ित मानवता की सेवा में सदैव तत्पर मुम्बई के कार्यकर्त्ताओं ने यज्ञोपरान्त सभी मरीजों और उनके परिचारकों को गायत्री परिवार द्वारा ही भोजन कराया गया।

सभी मरीजों को उनकी निराशा और हताशा को उत्साह में बदलने के लिए

> श्री मनुभाई पटेल ने बताया कि इस हॉस्टल में पिछले 9 माह से इस तरह का यज्ञीय कार्यक्रम सम्पन्न हो रहा है। हर महीने के प्रथम रविवार को यज्ञ किया जाता है। इस बार यह यज्ञ शरद पूर्णिमा के पावन अवसर पर आयोजित किया गया।

'हारिए न हिम्मत' पुस्तक भेंट की गई। यज्ञ के समय गायत्री परिवार के पुरोहितों ने कहा कि उत्साह और आत्मविश्वास एक संजीवनी है, जिससे दवाओं का असर भी कई गुना बढ़ जाता है। इस उत्साह को बनाए रखने के लिए मरीजों को पूज्य गुरुदेव के विचारों का चिंतन-मनन करना चाहिए। वे स्वयं पढ़ें या उनके परिचारक पढ़कर सुनाएँ, इससे उन्हें बहुत लाभ मिलेगा।

ईश्वर की आराधना का प्राथमिक गुण है स्वच्छता-सुव्यवस्था

दिखने लगे हैं पाँच वर्ष की सतत सक्रियता के उत्कृष्ट परिणाम

कोलकाता। प. बंगाल

गायत्री परिवार यूथ ग्रुप कोलकाता द्वारा विगत 5 वर्षों से हर शनिवार को गंगातट शुद्धि अभियान का कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इस शनिवासरीय सफाई अभियान कार्यक्रम की शुरूआत 28 अक्टूबर 2017 (गोपाष्टमी) वाले दिन श्रीरामपुर हुगली से की गई थी।

कई घाटों पर विगत पाँच वर्षों से यह सफाई अभियान निरन्तर चल रहा है। इसके उत्साहवर्धक परिणाम भी अब स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ी है। लोग अब पहले की भाँति इधर-उधर कचरा नहीं फेंकते, उसे उचित स्थान पर ही डालते हैं। गायत्री परिवार के मुठ्ठीभर कार्यकर्त्ताओं के प्रयासों से अब गंगा तट साफ-सुथरे रहने लगे हैं।

29 अक्टूबर को सतत स्वच्छता अभियान का 259 वाँ शनिवार था। उस दिन आगामी छठ पर्व पर छठ व्रतियों की सुविधा के लिए पितुरी घाट, पी.बी. घाट, कमरहट्टी एवं अगरपाड़ा क्षेत्र के घाट की सफाई की गई। सर्वश्री संजय पटनायक, आभा शंकर पांडे, राजकुमार सिंह, राजेश शर्मा, शिवम शर्मा, संदीप यादव, पवन महतो आदि गायत्री परिवार कोलकाता के सतत स्वच्छता अभियान में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं।

कोलकाता में गंगातट के पितुरी घाट की सफाई में जुटे गायत्री परिवार यूथ ग्रुप की टोली

स्वर्ण रेखा नदी स्वच्छता के लिए गाँव-गाँव चलाया जा रहा जनजागरण अभियान

राँची। झारखण्ड

राँची एवं छत्तीसगढ़ की प्रान्तीय गायत्री परिवार शाखा द्वारा आरम्भ किए गए स्वर्णरेखा नदी संरक्षण एवं घाट स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत 16 अक्टूबर 2022 को उलबेरा ग्राम, धालभूमगढ में पाँच कुंडीय यज्ञ का जनजागरण प्रधान कार्यक्रम आयोजित किया गया। गायत्री चेतना केंद्र, बेको के द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम के अन्तर्गत स्थानीय निवासियों ने नदी के घाट पर पहुँचकर स्वच्छता अभियान भी चलाया। यज्ञ के समय ग्रामवासियों ने प्रकृति के अमूल्य उपहार जल के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु जागरूकता बढ़ाते हुए व्यक्तिगत रूप से जल स्त्रोतों को प्रदूषित नहीं करने एवं इस अभियान को जन-जन तक प्रसारित करने संकल्प लिया।

यज्ञ संचालन श्री संतोष महतो एवं रविशेखर के द्वारा हुआ। सर्वश्री गुरूदेव महतो, कामाख्या सिंह, कपिल

उलबेरा ग्राम में यज्ञ कर स्वर्ण रेखा नदी को स्वच्छ रखने के प्रति ग्रामवासियों में आस्था बढ़ाई, संकल्प दिलाए

देव, बैजू सिंह, सत्यदेव प्रसाद, दिनेश सिंह, प्रदीप की गरिमामयी उपस्थिति एवं अभूतपूर्व सहयोग रहा।

गायत्री विद्यापीठ की सराहनीय पहल, विद्यार्थियों को स्वच्छता के संस्कार दिए

राजनांदगाँव। छत्तीसगढ़

गायत्री विद्यापीठ राजनांदगाँव ने पर्यावरण संरक्षण गतिविधि राजनांदगाँव के संयुक्त तत्वाधान में शहर के हृदय स्थल पर स्वच्छता एवं सामाजिक जागरूकतापरक कार्यक्रम आयोजित किया। प्राचार्य श्रीमती वत्सला अय्यर अभियान में सहयोगी शिक्षक-विद्यार्थियों से कहा कि शहर एवं अपने आसपास के इलाकों को साफ-सुथरा रखना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। सदैव इस बात का ध्यान रखें और अपने घर-संस्थानों के आसपास इस तरह के सामूहिक कार्यक्रम चलाते रहें, तभी हम स्वच्छ शहर, सुंदर शहर का सपना साकार कर सकेंगे।

पर्यावरण संरक्षण गतिविधि प्रमुख श्री निकुंज सिंघल ने अपनी संस्था द्वारा 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक चलाए जा रहे स्वच्छता एवं पर्यावरण जागरूकता अभियान की जानकारी दी। इसके अन्तर्गत पेड़ लगाना, उनकी सुरक्षा, पानी बचाओ, पॉलिथीन

सफाई अभियान में जुटे गायत्री विद्यापीठ के बच्चे और शिक्षक

हटाओ जैसे उद्देश्यों के लिए निबंध प्रतियोगिता, स्लोगन लेखन आदि आयोजन कराए गए। अभियान में अन्य संस्था बालरत्न सेवा मंच समिति एवं एक कोशिश एक पहल का विशेष योगदान रहा।

छत्तीसगढ़ के बच्चों में उत्साह बढ़ाती, नवविश्वास जगाती खेल स्पर्धा

राजनांदगाँव। छत्तीसगढ़

परम पूज्य गुरुदेव की विचारधारा के अनुरूप बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए समर्पित जिले की प्रतिष्ठित पाठशाला गायत्री विद्यापीठ में प्रादेशिक स्तर पर एकल विद्यालय खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। ज्ञात हो कि एकल विद्यालय दूरस्थ ग्रामीण अंचल में संचालित ऐसे विद्यालय हैं। जहाँ सूर्य की रौशनी तक भी पहुँच नहीं पाती, ऐसे घने जंगलों में निवासरत बच्चों की संपूर्ण शिक्षा-दीक्षा की जिम्मेदारी एकल अभियान समिति द्वारा पूरी की जाती है।

प्रतियोगिता में छत्तीसगढ़ प्रदेश के 15 अंचलों से आए 450 बच्चों ने भाग लिया। मुख्य रूप से बैलाडीला, दन्तेवाड़ा, जगदलपुर, कोण्डागांव, कांकेर, महासमुंद, राजनांदगांव, बिलासपुर, नवापारा (गरियाबंद), कोरबा, रायगढ़, अंबिकापुर, सूरजपुर, कुमकुरी (जशपुर), मनेन्द्रगढ़ आदि जिलों से बच्चे आए थे। ग्रामीण अंचलों से आए बच्चे गायत्री विद्यापीठ के उत्साहवर्धक वातावरण में स्वयं को पाकर प्रफुल्लित महसूस कर रहे थे।

16 अक्टूबर-रविवार को प्रतियोगिता का भव्य समापन किया गया। एकल अभियान संभाग के अध्यक्ष श्री नंदकिशोर सुरजन, संभाग सचिव श्री अमर ललवानी, उपाध्यक्ष श्री माऊजी भाई पटेल सहित अनेक सेवा समितियों से जुड़े अधिकारी, गायत्री विद्यापीठ के शिक्षक-शिक्षिकाएँ समारोह में उपस्थित रहे। सभी की करतल ध्वनि के बीच खेल स्पर्धा में विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। सभी प्रशिक्षकों को भी उनके सराहनीय योगदान हेतु सम्मानित किया गया।

प्रतियोगिताओं के विजेता एवं प्रतिभागी वनवासी बच्चे

वनवासी बच्चों के चेहरों पर आई खिलखिलाहट ही प्रतियोगिता की सच्ची सफलता है।

-श्री नंदकिशोर सुरजन, अध्यक्ष, एकल अभियान संभाग

श्री नंदकिशोर सुरजन ने अपने संबोधन में भोलेभाले वनवासी बच्चों को भगवान का रूप बताया। उन्होंने कहा कि इनकी खिलखिलाहट प्रसन्नता का आभास करा रही है। उनके चेहरों की खुशी आयोजन की सच्ची सफलता है। हमारा प्रयास है कि यह खुशी सदैव उनके चेहरों पर रहे।

केवल आत्मज्ञान ही हृदय को सच्चा आनन्द प्रदान करता है। - स्वामी रामतीर्थ

पर्वों के उल्लास में उभरी साधना की उमंग, भाव संवेदना और सृजनात्मकता

वनवासी ग्रामीण अंचल में जीवन साधना का उत्साह

घाटोल, बाँसवाड़ा। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ घाटोल पर नवरात्र साधना पर्व जीवन साधना की प्रेरणाओं से ओतप्रोत रहा। शक्तिपीठ पर प्रतिपदा से नवमी तक अखण्ड जप रखा गया। 32 साधकों ने इसमें विशेष रूप से भागीदारी करते हुए चौबीस-चौबीस हजार गायत्री महामंत्र जप के लघु अनुष्ठान पूर्ण किये। अंतिम दिन अनुष्ठान की पूणार्हुति पाँच कुंडीय यज्ञ के साथ संपन्न की गई। सैकड़ों श्रद्धालु-साधकों ने इसमें भाग लिया।

घाटोल में नवरात्र साधना की पूर्णाहुति के उत्साहभरे पल

पूर्णाहुति यज्ञ नाथद्वारा के अतिरिक्त जिला न्यायाधीश श्री लक्ष्मीकांत वैष्णव की मुख्य उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। शक्तिपीठ कार्यवाहक श्री अम्बालाल पंचाल द्वारा इस अवसर पर कन्या पूजन की प्रचलित परम्पराओं के माध्यम से नारी-सम्मान एवं सशक्तीकरण तथा पं. सुरेश मेहता द्वारा दुर्गा सप्तशती के पाठ से अपनी बुराइयों पर विजय प्राप्त करने की मार्मिक प्रेरणाएँ दी गईं। यज्ञ का संचालन परिव्राजक श्री संजय भारद्वाज ने किया।

दीपावली पर बच्चों की कलात्मकता के निखार के लिए तरह-तरह की प्रतियोगिताएँ आयोजित कीं

राजनांदगाँव। छत्तीसगढ़

गायत्री विद्यापीठ राजनांदगाँव ने दीपावली के उल्लास का सृजनात्मक उपयोग करते हुए तरह-तरह की कलात्मक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। प्रतियोगिताओं में हर कक्षा के विद्यार्थियों को शामिल किया गया। इन सृजनशील प्रयासों की सभी ने प्रशंसा की।

प्रतियोगिताओं के प्रतिभागी विद्यार्थी अपनी रचनाओं का प्रदर्शन करते हुए

प्रतियोगिताओं में बच्चों को सजावट की विभिन्न वस्तुओं की उपयोगिता को प्रदर्शित करते हुए अपनी रचनात्मकता को प्रदर्शित करने का अवसर दिया गया था। कक्षा 6वीं से 12वीं के विद्यार्थियों के बीच दीया स्टैण्ड सजाओ एवं वॉल हैंगिंग डिजाइन प्रतियोगिता आयोजित की गई। शाला की व्याख्याता श्रीमती उषा झा ने बताया कि नर्सरी से केजी-2 तक के विद्यार्थियों ने फूलों की रंगोली बनाई। कक्षा 3 से 5 तक के विद्यार्थियों ने दिये सजाए। कक्षा 4 एवं 5 के विद्यार्थियों ने दीपावली कार्ड सजाने एवं चित्रकला का कौशल दिखाया।

बच्चों की कलात्मकता ने सभी को प्रभावित किया। इस अवसर पर शाला की प्राचार्य श्रीमती वत्सला अय्यर ने सभी प्रतिभागियों को प्रेरित करते हुए उनकी सुंदर प्रस्तुति हेतु प्रोत्साहित किया। शिक्षण समिति के पदाधिकारियों ने बच्चों को शुभकामनाएँ दीं।

आयुर्वेद दिवस के रूप में मनाई धन्वन्तरि जयन्ती

बदायूं। उत्तर प्रदेश

गायत्री परिवार एवं प्रखर बाल संस्कारशाला की ओर से अम्बियापुर क्षेत्र के ग्राम दबिहारी में भगवान धन्वन्तरी की जयंती आयुर्वेद दिवस के रूप में मनाई गई। बच्चों-बुजुर्गों ने औषधीय पौधे लगाए और दादी-नानी के नुक्सों से रोगों का उपचार करने का तौर तरीका जाना।

धन्वन्तरि जयन्ती पर औषधीय पौधों का रोपण करते परिजन

श्री सुखपाल शर्मा ने औषधियों का महत्त्व बताया। उन्होंने कहा कि वनस्पति और वनौषधियों में स्वास्थ्य खजाना छिपा है। आवश्यकता उसे जानने-पहचानने की है।

श्री संजीव कुमार शर्मा ने कहा कि स्वस्थ जीवन एवं दीर्घ आयु प्राप्त करने का विज्ञान है आयुर्वेद। उन्होंने वनस्पतियों के प्रति श्रद्धा और विश्वास का भाव रखते हुए उन्हें नमन, वंदन कर सेवन करने की प्रेरणा दी। प्रज्ञा मंडल के भवेश शर्मा, रेवाराम शर्मा, सुमन, राजीव शर्मा, लवकुश, राधा शर्मा, मधु ने औषधीय पौधे लगाए।

संगठित प्रयासों से ग्राम विकास के संकल्प जगाए

इस्लामनगर, बदायूँ। उ.प्र.

ग्राम सिठौली के ग्राम देवता मंदिर परिसर में भव्य दीपयज्ञ सम्पन्न हुआ। शक्तिपीठ के परिव्राजक श्री सचिन देव ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए परिवार एवं समाज निर्माण के कार्यों में जिम्मेदारीपूर्वक भाग लेने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि संगठित प्रयास और संकल्प से बड़ी-बड़ी सफलताएँ संभव हैं। प्रज्ञा मण्डल सदस्य पंकज एवं भावेश ने भक्तिभाव के साथ पूजन सम्पन्न कराया। गाँव के अनेक परिवार दीपयज्ञ में शामिल होकर उत्साहित हुए।

सिठौली में दीपयज्ञ के साथ नवचेतना का संचार हुआ

शान्तिकुञ्ज के बैंक खाता क्रमांक

(सत्प्रवृत्ति संवर्धन एवं विचार क्रान्ति अभियान में बढ़-चढ़ कर सहयोग कीजिए)

दान की राशि के लिए

खाते का नाम : **श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (PAN No: AAATV1261C)**

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया :	10876858311 (11 अंक)	IFSC Code : SBIN0002350
पंजाब नेशनल बैंक :	3129010100000018 (16 अंक)	IFSC Code : PUNB0469400
एक्सिस बैंक :	156010100013846 (15 अंक)	IFSC Code : UTIB0000156
एचडीएफसी बैंक :	09431450000157 (14 अंक)	IFSC Code : HDFC0000943
आईसीआईसीआई बैंक:	023901000010 (12 अंक)	IFSC Code : ICIC0000239
बैंक ऑफ बरोडा :	09260100004639 (14 अंक)	IFSC Code : BARB0HARDWA

आपदा राहत कार्यों में सहयोग के लिए

खाते का नाम : **शान्तिकुञ्ज आपदा राहत कोष**

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया : **30491675367** (11 अंक) **IFSC :** SBIN0002350

उपरोक्त बैंक खातों में धनराशि जमा कराने के बाद ट्रांसफर का प्रूफ, अपना पूरा नाम, पता (पिन कोड सहित) तथा धनराशि का प्रयोजन ई-मेल (donation@awgp.org) अथवा व्हॉट्सएप (78170 00926) पर अवश्य भेजिए।

पत्रिका सदस्यता और साहित्य के लिए

खाते का नाम : **श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी)**

पंजाब नेशनल बैंक :	4694002100000572 (16 अंक)	IFSC Code : PUNB0469400
एक्सिस बैंक :	914020031711542 (15 अंक)	IFSC Code : UTIB0000156
एचडीएफसी बैंक :	09431450000037 (14 अंक)	IFSC Code : HDFC0000943

• पत्रिका सदस्यता एवं साहित्य के लिए बैंक खातों में धनराशि जमा कराने के बाद ट्रांसफर का प्रूफ, अपना पूरा नाम, पता (पिन कोड सहित) तथा धनराशि का प्रयोजन उससे सम्बद्ध ई-मेल अथवा व्हॉट्सएप पर भेजिए।

प्रज्ञा अभियानः ई-मेल (pragyaabhiyan@awgp.in) साहित्य ई-मेल (legalcell@awgp.org) अन्य पत्रिकाओं के ई-मेल आई.डी. उन पत्रिकाओं में देखें।

• धनराशि यथासंभव NEFT या RTGS करने का ही प्रयास करें। नकद राशि जमा कराने पर शान्तिकुञ्ज के खाते से 57.50 कट जाते हैं। पत्रिकाओं का चंदा जमा कराने जैसे छोटी राशि के प्रयोजनों में यह नुकसान बहुत बड़ा होता है।

सावधान रहें

• यदि कोई शान्तिकुञ्ज के किसी प्रयोजन के लिए किसी अन्य खाते में धन जमा कराने के लिए कहता है, तो ऐसा कभी न करें। ऐसा करना आपके साथ धोखा हो सकता है। ऐसा करने के लिए कहने वालों की सूचना शान्तिकुञ्ज को अवश्य दें।

विदेशी मुद्रा के लिए

विदेशी मुद्रा जमा कराने के लिए अलग नियम और शान्तिकुञ्ज का अलग खाता है। इसका सम्पूर्ण विवरण व्हॉट्सएप 9258360512 अथवा ई-मेल- abroadcell@awgp.org से प्राप्त किया जा सकता है।

निरंतर बढ़ती मँहगाई के कारण मिशन की पत्रिकाओं का चंदा बढ़ गया है, जिसकी सूचना अगले अंक में प्रकाशित की जाएगी। 8 नवम्बर के बाद व्हॉट्सएप 9258369413 से भी नई दरें जानी जा सकती हैं।

पश्चिमी देशों की नकल करना एक भूल है

मिशिगन यूनिवर्सिटी में सोशियोलॉजी के प्रोफेसर प्रो. एरिक गेडेस के भारत में नैतिक मूल्यों के पतन पर विचार

मैं कई बार भारत आया हूँ और हर बार मैं यहाँ के लोगों को पश्चिमी देशों की नकल करते देख हैरान रह जाता हूँ। मुझे समझ नहीं आता कि अपनी इतनी सुन्दर, इतनी महान संस्कृति में क्या कमी नजर आती है उन्हें कि वो वेस्ट की नकल करने में लगे हैं। भारतीय पहनावा, यहाँ का खानपान, जीवन शैली, तीज-त्यौहार के पीछे साइंस और मेडिकल लॉजिक है। मैं समझ नहीं पाता हूँ कि अपनी प्राचीनतम और महान संस्कृति को छोड़ हमारी नकल से क्या हासिल हो रहा है। बल्कि मैं तो कहूँगा कि हिंदुस्तान ने अपने संयुक्त परिवार खोकर बहुत कुछ खोया। बच्चों के संस्कार, बुजुर्गों की खुशी, नैतिकता भी खोई ... और मेरे देश की नकल कर पाया नशा, लालच और अकेलापन।

प्रो. एरिक गेडेस

इन्दौर के एक रिपोर्टर द्वारा प्रकाशित समाचार के संदर्भ से

अमेरिका में युवाओं की असमय मृत्यु और आत्महत्या, एक्सीडेण्ट और आक्रामकता का कारण बताते हुए वे कहते हैं-

अमेरिका के युवाओं को सारे ऐश-ओ आराम हासिल हैं, फिर भी उनमें एक अजीब सा खालीपन है। इसका कारण है वहाँ के परिवारों में बिखराव। किसी भी समाज का आधार मजबूती से बँधे परिवार हैं। परिवार खत्म होंगे तो सामाजिक ढाँचा गड़बड़ाएगा ही। रिश्तों में गहरा प्रेम होता है तो बच्चे ऐसा कोई काम नहीं करते, जिससे परिवार को चोट पहुँचे या उनके सम्मान पर दाग लगे। जब यह अटैचमेण्ट नहीं होता तो बच्चे रास्ता भटक जाते हैं। वे उन राहों पर निकल पड़ते हैं जो आकर्षक तो हैं, लेकिन पतन की ओर ले जाते हैं।

युवावस्था में पापों का त्याग करना पैगम्बरों का काम है। वृद्धावस्था में तो जालिम भेड़िया भी साधु बन जाता है।

ज्योति पर्व पर युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज से सत्प्रेरणाओं का संचार

जरूरतमंदों के जीवन में व्याप्त अंधकार को मिटाने के लिए अपनी विभूतियों का एक अंश अवश्य लगाएँ। -श्रद्धेया शैल जीजी

गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्ज में ज्योतिपर्व दीपावली अपनी आदर्श परम्परा के अनुरूप उमंग और उत्साह के साथ मनाया गया। श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल दीदी ने पर्व पूजन के अन्तर्गत लक्ष्मी, गणेश, बही खातों का पूजन और दीपयज्ञ के साथ दीपावली का पर्व संदेश दिया।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने कहा कि दिवाली के अवसर पर प्रज्वलित दीपमालाएँ हमें सफल-सार्थक जीवन की रीति-नीति सिखाती हैं। जैसे दीपक अपने भीतर के तेल (स्नेह) की एक-एक बूँद जलाकर जग को प्रकाशित करता हैं, वैसे ही हमें भी तपोनिष्ठ जीवन जीते हुए ज्ञानार्जन एवं आत्मशक्तियों के जागरण की साधना करनी चाहिए। अपने ज्ञान के प्रकाश से जग को आलोकित कर विश्व के कण-कण में व्याप्त ईश चेतना की सच्ची आराधना करनी चाहिए।

दीपावली पर्व पूजन के समय दीप प्रज्वलित करते श्रद्धेयद्वय

अपने ज्ञानदीप से विश्व मानवता को आलोकित करने की प्रेरणा देती है दिवाली। - श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या एवं श्रीमती शेफाली पण्ड्या ने मुख्य यजमान के रूप में पर्व पूजन का विधि-विधान सम्पन्न किया। श्रद्धेया शैल जीजी ने जरूरतमंदों के जीवन में व्याप्त अंधकार को मिटाने हेतु अपने ज्ञान, प्रभाव, धन एवं समय का एक अंश लगाने की प्रेरणा दी। दीपावली पर्व का वैदिक कर्मकाण्ड श्री श्याम बिहारी दुबे एवं श्री उदय किशोर मिश्र ने सम्पन्न कराया। इस अवसर पर शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री महेन्द्र शर्मा जी, लेखा विभागाध्यक्ष श्री हरीशभाई ठक्कर आदि प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

ईको फ्रेण्डली दीवाली मनाई गई।

महिला मण्डल की बहिनों द्वारा शान्तिकुञ्ज व देव संस्कृति विश्वविद्यालय परिसर को आकर्षक रंगोलियों से सजाया था।

सादगी से मनाया गया 'चेतना दिवस'

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के व्यक्तित्व की प्रेरणाओं को उकेरने वाले कार्यक्रम हुए

अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख व देव संस्कृति विवि के कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या का जन्मदिन (रूप चतुर्दशी) 'चेतना दिवस' के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष भी हजारों श्रद्धालुओं ने अपने जीवन-आदर्श का 73वाँ जन्मोत्सव उसी उदात्त भावनाएँ एवं अगाध श्रद्धा के साथ हर्षोल्लासपूर्वक मनाया। यह आयोजन बड़े सादगीपूर्ण वातावरण में दीपयज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ। श्रद्धेया शैल जीजी, व्यवस्थापक श्री महेन्द्र शर्मा जी सहित शान्तिकुञ्ज के कार्यकर्त्ता भाई-बहिनों, देसंविवि परिवार एवं गायत्री विद्यापीठ के बच्चों ने गुलदस्ते, अंगरंग के भावोद्गारों से गुथीं कविताएँ और विशिष्ट उपहार भेंटकर अपनी-अपनी शुभकामनाएँ दीं, उनके स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन की मंगलकामना की।

'चेतना दिवस' के आयोजन पूरे देश एवं विदेशों में हुए। शान्तिकुञ्ज के अंतेवासी कार्यकर्त्ता एवं विभिन्न शिविरों में आये साधकों ने यहाँ की 27 कुण्डीय यज्ञशाला में श्रद्धेय डॉ. साहब की दीघार्यु एवं स्वस्थ जीवन की मंगल कामना करते हुए विशेष आहुतियाँ दीं। विभिन्न शक्तिपीठों एवं प्रज्ञा संस्थानों में भी श्रद्धेय के जीवन के अनुकरणीय संस्मरणों को याद करते हुए यज्ञ, दीपयज्ञ आदि कार्यक्रम हुए।

देव संस्कृति विवि. के मृत्युंजय सभागार में 'चेतना दिवस' के उपलक्ष्य में तरह-तरह के प्रेरणादायी सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए।

जन्मदिवस पर श्रद्धेय को शुभकामनाएँ देते शान्तिकुञ्ज वासी

श्रद्धेय डॉ. साहब ने अपने तन का दीया, भावनाओं का तेल एवं ज्ञान-कर्म की बाती को अपने सद्गुरु के चरणों में समर्पित कर उसे उन्हीं की आकांक्षाओं के अनुरूप समाज, राष्ट्र के विकास के लिए होम दिया है। - श्रद्धेया शैल जीजी

50 क्षयरोगियों को पोषण किट दिये

जरूरतमंद मरीजों को पोषण किट प्रदान करती श्रीमती शेफाली पण्ड्या उनके बायें डॉ. चिन्मय जी, डॉ. राहुल कुमार, श्री महेन्द्र शर्मा व डॉ. मंजू

प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत अखिल विश्व गायत्री परिवार 'निक्षय मित्र' की भूमिका निभा रहा है। इसी अभियान के अन्तर्गत शान्तिकुञ्ज परिवार ने 29 अक्टूबर 2022 के दिन 50 से अधिक क्षय रोग पीड़ितों को पोषण किट प्रदान किए। लाभान्वित रोगियों का चयन हरिद्वार चिकित्सा प्रशासन की ओर से किया गया था।

गायत्री परिवार की निक्षय मित्र की भूमिका पीड़ित मानवता की सेवा में उठाया जा रहा एक और सार्थक कदम है। देश भर में फैले शक्तिपीठ, प्रज्ञा संस्थानों की ओर से भी इसी प्रकार क्षयरोगियों को समय-समय पर दवाइयों के साथ पोषण किट उपलब्ध कराये जाते हैं।

क्षयरोगियों को पोषण किट वितरण का कार्यक्रम शान्तिकुञ्ज स्थित आचार्य पं. श्रीराम शर्मा शताब्दी चिकित्सालय में आयोजित हुआ था। कार्यक्रम का शुभारंभ देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या एवं गायत्री विद्यापीठ की व्यवस्था मण्डल प्रमुख श्रीमती शेफाली पण्ड्या, शान्तिकुञ्ज व्यवस्थापक श्री महेन्द्र शर्मा आदि ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलन कर किया। इस अवसर पर डी.टी.ओ. डॉ. राहुल कुमार सिंह ने टीबी मुक्त भारत अभियान की विस्तृत जानकारी दी। तत्पश्चात मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. के.के. सिंह सहित उपस्थित गणमान्यों ने हरिद्वार जनपद के भोपतवाला, खड़खड़ी, इंदिरा बस्ती, ब्रह्मपुरी आदि क्षेत्रों से आये 50 से अधिक क्षयरोगियों को पोषण किट प्रदान किए। पोषण किट में आटा, तेल सहित अन्य खाद्य सामग्री शामिल थी। इस अवसर पर जन्मशताब्दी चिकित्सालय के डॉ. मंजूश्री चोपदार, डॉ. शादाब, श्री अनिल नेगी, श्री अवनीश, मोहम्मद सलीम, कनक, शिवानी आदि मौजूद रहे।

देसंविवि में वियतनाम के योग संस्थानों के प्रमुखों की कार्यशाला

वैचारिक एवं भावनात्मक परिष्कार पर विशेष जोर रहा

वियतनाम के सुप्रसिद्ध 13 योग संस्थानों के प्रमुखों देव संस्कृति विश्वविद्यालय आए। उनके लाभार्थ 'योग एवं आयुर्वेद' विषय पर विशेष कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें विश्वहित को ध्यान में रखते हुए योग और आयुर्वेद के व्यावहारिक एवं सैद्धांतिक पक्षों पर जानकारियाँ साझा की गईं। विशेषज्ञों ने कहा कि वर्तमान समय में जैसे-जैसे लोगों में समग्र स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ रही है, वैसे-वैसे प्राचीन निरापद चिकित्सा पद्धतियों के प्रति लोगों की आस्था भी बढ़ रही है। हमें इन आकांक्षाओं को ध्यान में रखते हुए कार्य करना होगा।

देसंविवि के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने 19 अक्टूबर को कार्यशाला के समापन सत्र को सम्बोधित किया। उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव के दृष्टिकोण की चर्चा करते हुए लोगों के वैचारिक एवं भावनात्मक परिष्कार की ओर ध्यान आकर्षित किया। इस दृष्टि से उन्होंने शान्तिकुञ्ज एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के सकारात्मक एवं आध्यात्मिक वातावरण की चर्चा भी की।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने अतिथियों को धन्यवाद देते हुए पुनः पधारने का आमंत्रण दिया। कार्यशाला की उपलब्धियों से सभी अतिथिगण अभिभूत थे।

प्रतिकुलपति जी से प्रमाणपत्र प्राप्त कर उल्लसित प्रतिभागी गण

धन्वन्तरि जयंती ने दी प्रकृति के संग संतुलन व सामंजस्य स्थापित करने की प्रेरणाएँ

शान्तिकुञ्ज और देसंविवि की फार्मेसी में धन्वन्तरि जयन्ती पर्व मनाते चिकित्सक

कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी-22 अक्टूबर 2022 के दिन देव संस्कृति विश्वविद्यालय स्थित फार्मेसी एवं शान्तिकुञ्ज के मुख्य सभागार में आयुर्वेद के प्रवर्तक भगवान धन्वन्तरि की जयंती आयुर्वेद के विकास में जुट जाने के आह्वान के साथ मनाई गई। फार्मेसी में हवन के साथ भगवान धन्वन्तरि की विशेष पूजा-अर्चना की गयी। इस अवसर पर देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने कहा कि भगवान धनवंतरि की आराधना के साथ निरोगी काया की कामना और प्रार्थना से जुड़ा है। उन्होंने प्रकृति के अनुसार आहार-विहार बनाये रखने के लिए प्रेरित किया।

अपने संदेश में श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने कहा कि देवताओं के चिकित्सक, दीर्घतपा के पुत्र व केतुमान के पिता धन्वन्तरि भगवान विष्णु के तेरहवें अवतार हैं। धन्वन्तरि जयन्ती अंतः और बाह्य प्रकृति को समझने और उनमें संतुलन, सामंजस्य स्थापित करने की प्रेरणा देने वाला पर्व है। परमात्मा ने मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ जीवन दिया है, उसका उपयोग सदैव स्वस्थ रखकर उत्कृष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए निरंतर गतिशील रहते हुए ही किया जाना चाहिए। डॉ. ओ.पी. शर्मा, डॉ. गायत्री शर्मा, डॉ. मंजू चोपदार, डॉ. शिवानंद साहू, डॉ. अलका मिश्रा, डॉ. वन्दना श्रीवास्तव आदि ने उपस्थित जनमानस को स्वास्थ्य रक्षा के लिए आदर्श जीवनचर्या और आयुर्वेदिक उपायों की जानकारी दी।

शान्तिकुञ्ज में सत्र सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण सूचना

शान्तिकुञ्ज में चलने वाले नौ दिवसीय जीवन साधना सत्र शृंखला के अंतर्गत 1 से 9 दिसंबर 2022 तथा 11 से 19 दिसंबर 2022 के सत्र स्थगित कर दिए गए हैं। इसके अतिरिक्त दिसम्बर के तीसरे सत्र (21 से 29 दिसंबर 2022) में भी स्थान भर चुका है। अतः जीवन साधना सत्र में भागीदारी के इच्छुक परिजन जनवरी-2023 के बाद के सत्रों के लिए ही नए आवेदन करें। **शिविर विभाग, शान्तिकुंज, हरिद्वार। उत्तराखण्ड पिन-249411 फोन : 9258369749**

निर्माण की दिशाएँ भिन्न होती हैं। पुरानी लीक पर चलकर कोई नई राह नहीं बनी।
- नैपोलियन

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार नीचे लिखे ई-मेल से भेजें-
email : news@awgp.org

Publication date: 12.11.2022
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23